भारतीय समाज: मिली-जुली संस्कृति

भारतीय समाज में बहुत विविधता रही है। आर्यों के आने के समय से ही विभिन्न सांस्कृतिक या धार्मिक धाराओं में पारस्परिक संघर्ष, सहयोग और संश्लेषण होता रहा है। ब्राह्मणवाद ने समाज पर रूढ़ियों पर आधारित कड़ी वर्ण व्यवस्था लागू की। लेकिन जैन धर्म, बुद्ध धर्म जैसी धाराओं, कबीर, नानक तथा जोतिबा, खंडोबा तुकाराम, चैतन्य महाप्रभु और तंत्र जैसे दूसरी स्थानीय परंपराओं ने स्थानीय संस्कृतियों को पैदा किया। राजाओं, जमींदारों और उच्च जातियों ने धर्म का ध्यान किए बगैर शोषण किया। नीची जातियों के लोग आपस में खुलकर मिलते थे इससे सामाजिक परंपराओं का विकास हुआ।

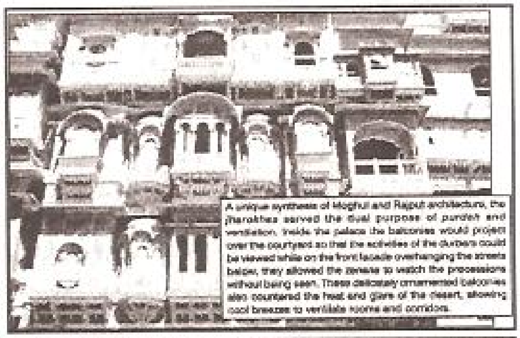

इसके विपरीत हमारी संस्कृति बहुलता लिए है। यह देश की विविधता को एकता में समेटे हुए है। इसने यहां पर आकर बसे लोगों से बहुत कुछ लिया है। हिंदुओं के भी बहुत से संप्रदाय हैं और उनकी संस्कृति एकरूप नहीं है। केवल अभिजनों की संस्कृति को हिंदू संस्कृति कहा जाता है, इसमें से दलितों की संस्कृति को बाहर निकाल दिया जाता है।

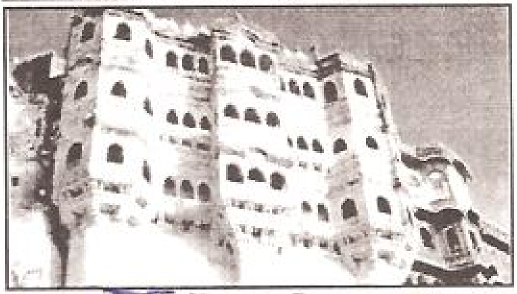

हवा महल: जयपुर

मालाबार तट पर रहने वाले लोगों और अरबों में बहुत व्यापार होता था। वास्तव में भारत में सबसे पहले इस्लाम अरब व्यापारियों के जरिए ही आया। बहुत से तटीय राजाओं ने इन व्यापारियों तथा उनके संपर्क से अस्तित्व में आए स्थानीय मुसलमानों द्वारा इबादत के लिए मस्जिदें बनवाईं। राजनीतिक क्षेत्र में मुगलों के आने से बहुत परिवर्तन आए। दूसरे शासकों की तरह मुगल भी शोषक थे। अपना शासन चलाने के लिए उन्होंने हर तरह की जबर्दस्ती और विचारधारात्मक चालबाजियां कीं। इस्लाम के प्रभाव और मुगलों की संस्कृति के मेलजोल से हिंदुस्तानी संस्कृति संगीत, मूर्तिकला, वास्तुकला, साहित्य और ललित कला सभी क्षेत्रों में फली-फूली।

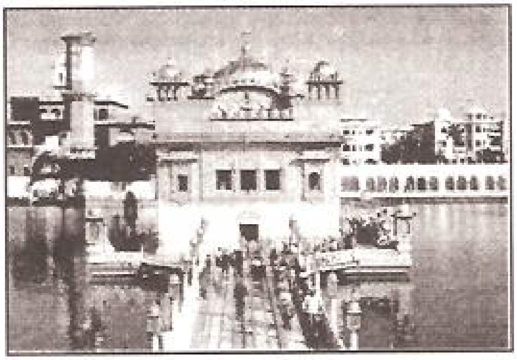

स्वर्ण मंदिर, हरमंदिर साहिब, अमृतसर

15वीं शताब्दी में मुहम्मद शाह के शाननकाल में निर्मित सरखेजी गुजरात स्थित यह मंडप भारतीय वास्तुकला के पुराने तत्वों और गुंबदों का मिश्रण है।

।। दोहे ।।

तै रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसिबासर लाग्यो रहै, कृष्णचंद्र की ओर।
रहिमन यहि संसार में, सब सों मिलिए धाइ।
ना जैनै कोहि रूप में, नारायण मिली जाइ।।

... रहीम

तुलसी, सरनाम गुलाम है राम को,
जाको रुचौ सो कहे कछु वोहु।
मांग के खयिबो, मजीद मा सोइबो,
लेबै का एक न देबै का दोऊ।।

... तुलसी

मिली जुली संस्कृति।।

धार्मिक स्तर पर इस्लाम और स्थानीय हिंदू परंपराओं में संपर्क हुआ तथा सूफी और भक्ति पंथ मजबूत हुए। ये दोनों ही गरीबों में बहुत लोकप्रिय थे।

सूफियों का झुकाव इस्लाम के आध्यात्मिक पक्ष की ओर था। उनका कट्टरवादी इस्लाम उलेमाओं से विरोध था। ये उलेमा समाज के अभिजन और सत्ता केंद्रों के नजदीक थे।

दूसरी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की तरह साहित्य में भी सामाजिक प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। बाबा फरीद ने पंजाबी में लिखा और उन्हें पंजाबी कविता के आधार स्तंभों में से एक माना जाता है। शेख मोहम्मद ने मराठी में लिखा। गुरु रामदास ने शेख मोहम्मद की भूरि-भूरि प्रशंसा की और लिखा–''शेख मोहम्मद तुम महान हो। केवल तुमने ही ऐसी भाषा में विश्व की बुनियादी एकता और पहचान को वास्तव में समझा है।''

समुदायों के अभिजन अपने निहित स्वार्थों के कारण दूसरे समुदायों और धर्मों को हिकारत की नजर से देखते हैं। लेकिन दोनों समुदायों के गरीब लोग धर्म की सीमाओं के परे महात्माओं के पास साथ–साथ जाते थे।

कबीर के अनुयायी गरीब मुसलमानों और हिंदुओं में बहुत से थे। उन्होंने उलेमा और ब्राह्मण दोनों के कट्टरपन की आलोचना की और कहा कि राम, रहीम, अल्लाह और हरि एक ही आध्यात्मिक शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। जैसे कि एक ही सोने से विभिन्न प्रकार के गहने बनाए जा सकते हैं इसी तरह से ये संत उसी दिव्यशक्ति के रूप हैं।

रामानंद ने भक्ति आंदोलन शुरू किया। उन्होंने राम की भक्ति का मार्ग दिखाया और अपने द्वार नीची जाति के लोगों और स्त्रियों तथा मुसलमानों के लिए खोल दिए। तुलसीदास सच्चे रामभक्त थे। वास्तव में वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ रामभक्त थे। उन्होंने अपना साहित्य संस्कृत भाषा में न लिखकर अवधी भाषा में लिखा जिससे कि सब उसे पढ़ सके। इस वजह से उन्हें उस समय के अभिजन समाज ने स्वीकार नहीं किया। वे अयोध्या में एक मस्जिद में रहते थे।

कबीर ने ब्राह्मणों और मुल्लाओं द्वारा प्रचलित कर्मकांड और अंधविश्वासों का विरोध किया। उन्होंने भौतिक मूल्यों पर जोर दिया और अलग-अलग धर्मों के लोगों के बीच मेल जोल पर बल दिया।

गुरु नानक

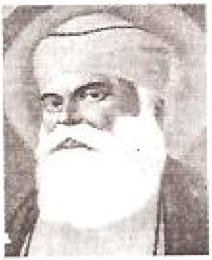

गुरु नानक ने एक नया धार्मिक आंदोलन, सिख धर्म, चलाया।
उन्होंने इस्लामिक विचारधारा के अनुसार
ईश्वर की एकता प्रतिपादित की और साथ ही पुनर्जन्म, नैतिक और
आध्यात्मिक सुधार के हिंदू सिद्धांत को स्वीकार किया।

कुलकानि हियो जति भाजति है...
कल कानन कुंडल मोरपखा
उर पै बनमाल बिराजति है।
मुरली कर में अधरा मुसकीन
तरंग महाछबि छाजति है। ....रसखान

रसखान ने हिंदी कविता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी इस हिंदी कविता को देखें।

फारसी और हिंदी के सहयोग से उर्दू अस्तित्व में आई। 13वीं शताब्दी में एक फारसी उपबोली और दिल्ली के आसपास बोली जाने वाली पश्चिमी हिंदी के मिश्रण से एक उपबोली हिंदवी अथवा हिंदुस्तानी अस्तित्व में आई जिसे बाद में उर्दू कहा गया। अकबर के खजाना वजीर राजा टोडरमल ने हुक्म दिया कि सभी खाते और खातोकिताबत फारसी भाषा में की जाए। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायुँनी ने हिंदी पंडितों के सहयोग से अथर्ववेद और रामायण का फारसी में अनुवाद किया। मध्यकालीन भारत में अब्दुल फज़ल, औरंगजेब, मुंशी हरक राम, चंद्रभान ब्राह्मण, मुंशी माधव राम फारसी के महान लेखक थे।